पुणे विष्वविद्यालय, पुणे

एम. ए. हिंदीः भाग 1 और 2

जून 2013 से (50 : 50 पैटर्न)

षैक्षणिक वर्ष–2013–14 से

प्रस्तुत पाठ्यक्रम की रचना विष्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली की 'मॉडेल पाठ्यचर्या' के अनुसार की गई है।

- एम.ए. हिंदी प्रथम सत्र और द्वितीय सत्र के इस पाठ्यक्रम का अध्ययन व अध्यापन एक साथ जून 2013 से आरंभ होगा।
- संपूर्ण पाठ्यक्रम का विभाजन चार सत्रों (दो वर्ष) के लिए होगा। विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्यक्रम में से प्रथम सत्र के लिए प्रष्नपत्र 1 से 4 तक का और द्वितीय सत्र के लिए प्रष्नपत्र 5 से 8 तक, तृतीय सत्र के लिए प्रष्नपत्र 9 से 12 तक और चतुर्थ सत्र के लिए प्रष्नपत्र 13 से 16 तक का अध्ययन करना होगा।
- 'हिंदी' का विषेष स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के लिए सामान्य स्तर और विषेष स्तर के प्रष्नपत्रों का अध्ययन करना होगा।
- प्रष्नपत्र 2, 3, 4, 6, 7, 8, 10, 11, 12, 14, 15, 16 विषेष स्तर के रहेंगे। इनमें से प्रष्नपत्र 4 और प्रष्नपत्र 8 के अंतर्गत 4–4 विकल्प रखे गए हैं। प्रष्नपत्र 12 और प्रष्नपत्र 16 के अंतर्गत 3–3 विकल्प रखे गए हैं। विद्यार्थियों को इनमें से प्रति सत्र किसी एक ही वैकल्पिक प्रष्नपत्र का चयन करना होगा।
- किसी विषेष विषय में विषेषता प्राप्त करने के लिए प्रष्नपत्र 4 और प्रष्नपत्र 8 के अंतर्गत प्रति सत्र के लिए 4–4 विकल्प रखे गए हैं। प्रष्नपत्र 12 और प्रष्नपत्र 16 के अंतर्गत 3–3 विकल्प रखे गए हैं। विद्यार्थी अपने अध्ययन केंद्र /महाविद्यालय में पढ़ाए जानेवाले विकल्पों में से किसी एक ही विकल्प का अध्ययन कर सकता है।

एम ए (हिंदी)
पाठ्यक्रम की रूपरेखा
जून 2013 से (50 : 50 पैटर्न)
एम. ए. (हिंदी) प्रथम सत्र

कुलः 60 तासिकाएँ (प्रत्येक इकाई के लिए 15 घंटे)

चारों प्रष्नपत्रों के लिए प्रथम सत्र में अंतर्गत परीक्षा	–	50 अंक
सत्रांत परीक्षा	–	50 अंक
कुल	–	100 अंक

प्रष्नपत्र 1 : सामान्य स्तर : प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य
(अमीर खुसरो और जायसी)

प्रष्नपत्र 2 : विषेष स्तर : आधुनिक हिंदी कथा साहित्य
(उपन्यास और कहानी)

प्रष्नपत्र 3 : विषेष स्तर : भारतीय साहित्यषास्त्र

प्रष्नपत्र 4 : विषेष स्तर : वैकल्पिक

विषेष साहित्यकारः

अ) कबीर

आ) तुलसीदास

इ) नाटककार सुरेंद्र वर्मा

ई) कवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

जून 2013 से (50 : 50 पैटर्न)
एम. ए. (हिंदी) द्वितीय सत्र

कुल 60 तासिकाएँ (प्रत्येक इकाई के लिए 15 घंटे)

चारों प्रष्नपत्रों के लिए द्वितीय सत्र में अंतर्गत परीक्षा	–	50 अंक
सत्रांत परीक्षा	–	50 अंक
कुल	–	100 अंक

प्रष्नपत्र 5 : सामान्य स्तर : मध्ययुगीन हिंदी काव्य (सूरदास, बिहारी और भूषण)

प्रष्नपत्र 6 : विषेष स्तर : आधुनिक हिंदी नाटक और निबंध

प्रष्नपत्र 7 : विषेष स्तर : पाष्चात्य साहित्यषास्त्र

प्रष्नपत्र 8 : विषेष स्तर : वैकल्पिक : विषेष विधा तथा अन्य

क) हिंदी उपन्यास

ख) यात्रा साहित्य

ग) प्रयोजनमूलक हिंदी

घ) हिंदी दलित साहित्य

प्रथम सत्र

प्रष्नपत्र 1: सामान्य स्तर :

प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य

(अमीर खुसरो तथा जायसी)

उद्देष्यः

1. हिंदी साहित्य की आदिकालीन तथा भक्तिकालीन काव्य प्रवृत्तियों की जानकारी देना ।
2. छात्रों को प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य–कृतियों का परिचय कराना।
3. प्राचीन तथा मध्ययुगीन कवियों की काव्य कला से छात्रों को अवगत कराना।
4. छात्रों को हिंदी की प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य परंपरा से परिचित कराना।
5. छात्रों को प्राचीन तथा मध्ययुगीन हिंदी भाषा से अवगत कराना।
6. छात्रों में प्राचीन तथा मध्ययुगीन काव्य अध्ययन के माध्यम से समीक्षात्मक दृष्टि विकसित कराना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. पी. पी. टी. /भाषा प्रयोगषाला का प्रयोग।
5. अतिथि विषेषज्ञों के व्याख्यान ।
6. अध्ययन यात्रा का आयोजन करना।

पाठयपुस्तकें :

1) अमीर खुसरो और उनका हिंदी साहित्य

संपादक : डॉ भोलानाथ तिवारी

प्रकाषक : प्रभात प्रकाषन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली – 110 002

ससंदर्भ व्याख्या के लिए रचनाएँ :

अ) पहेलियाँ– क. अंतर्लिपिका– 1, 4, 12, 15, 17, 24, 28, 29 = 08

ख. बहिर्लिपिका– 13, 18, 20, 21, 23, 26, 28, 37, 46, = 09

आ) मुकरियाँ– 7, 9, 11, 15, 19, 30, 48, 55, 63, 70 = 10

इ) गीत– 2, 5, 7 = 03

2) पद्मावत : मलिक मुहम्मद जायसी

संपादक : वासुदेवषरण अग्रवाल

प्रकाषक : साहित्य सदन, चिरगाँव झाँसी

ससंदर्भ व्याख्या के लिए खंड़ :

1. मानसरोदक खंड़
2. नागमति वियोग खंड़

अध्ययनार्थ विषयः

1. अमीर खुसरो के काव्य में समाज
2. अमीर खुसरो के गीतों में संवेदनषीलता
3. अमीर खुसरो की पहेलियों में लोकरंजकता
4. अमीर खुसरो की मुकरियों में लोकरंजकता
5. अमीर खुसरो के निस्बतें, दो सखुने और ढकोसलों में मनोरंजन
6. अमीर खुसरो का खड़ीबोली हिंदी के विकास में योगदान
7. अमीर खुसरो की भाषा
8. अमीर खुसरो की काव्य कला
9. अमीर खुसरो के काव्य की देन
10. पद्मावत में प्रेम भाव
11. पद्मावत में सौंदर्य वर्णन
12. पद्मावत में विरह वर्णन
13. पद्मावत में प्रकृति चित्रण
14. पद्मावत में चरित्र चित्रण

15. पद्मावत में इतिहास और कल्पना
16. पद्मावत की महाकाव्यात्मकता
17. पद्मावत की भाषा तथा अलंकार योजना
18. जायसी की काव्य कला

———————————————

संदर्भ ग्रंथः

1. अमीर खुसरो – डॉ. हरदेव बाहरी
2. खुसरो की हिंदी कविता– ब्रजरत्न दास
3. जायसी के पद्मावत का मूल्यांकन – प्रो. हरेंद्रप्रताप सिन्हा
4. महाकवि जायसी और उनका काव्य – डॉ इकबाल अहमद
5. मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य – डॉ षिवसहाय पाठक
7. जायसी पद्मावत काव्य और दर्षन – डॉ गोविंद त्रिगुणायत
8. पद्मावत में काव्य, संस्कृति और दर्षन – डॉ द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
9. पद्मावत का काव्य सौंदर्य – डॉ चंद्रबली पांड़ेय
10. हिंदी के प्रतिनिधि कवि – डॉ. सुरेष अग्रवाल

————————————

प्रष्नपत्र 2 : विषेष स्तर

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य

(उपन्यास और कहानी)

उद्देष्यः

1. गद्य की प्रमुख विधाओं के तात्विक स्वरूप का परिचय देना ।
2. प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम की जानकारी देना ।
3. विधा विषेष के तात्विक स्वरूप एवं ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विषेष का महत्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता बढ़ाना ।
4. रचना के आस्वादन एवं समीक्षण की क्षमता विकसित करना ।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्यपुस्तकेंः

1. उपन्यास– कलिकथाः वाया बाइपास– अलका सरावगी

प्रकाषक : आधार प्रकाषन, 267 सेक्टर 16 पंचकोला, हरियाणा–134 113

2. हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ
संपादक– डॉ. सुरेष बाबर, डॉ. विट्ठलसिंह ढाकरे
प्रकाषक : अरुणोदय प्रकाषन,
21–ए अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली – 110 002

अध्ययनार्थ विषयः

1. हिंदी उपन्यास विधा का विकास
2. विवेच्य रचनाकार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
3. कलिकथाः वाया बाइपास : संवेदना और षिल्प
4. कलिकथाः वाया बाइपास : चरित्र तत्व
5. कलिकथाः वाया बाइपास : संवाद तत्व
6. कलिकथाः वाया बाइपास : देषकाल एवं वातावरण
7. कलिकथाः वाया बाइपास : उद्‌देष्य
8. कलिकथाः वाया बाइपास : षैलीपक्ष
9. कलिकथाः वाया बाइपास : षीर्षक की सार्थकता
10. हिंदी कहानी विधा का विकास
11. कहानी विधा के तत्व तथा आलोचना : हिंदी की श्रेष्ठ कहानियों के संदर्भ में

हिंदी की श्रेष्ठ कहानियाँ

1.	यही मेरा वतन	–	प्रेमचंद
2.	पुरस्कार	–	जयषंकर प्रसाद
3.	उसकी माँ	–	पांडेय बेचन षर्मा 'उग्र'
4.	हंसा जाई अकेला	–	मार्कण्डेय
5.	वह क्या था?	–	हरिषंकर परसाई
6.	रिमाइण्डर	–	राजेन्द्र यादव
7.	सज़ा	–	मन्नू भंडारी
8.	मनहूसाबी	–	ममता कालिया
9.	वह मैं ही थी	–	मृदला गर्ग
10.	लिटरेचर	–	संजीव
11.	मुंबई कांड	–	ओमप्रकाष वाल्मीकि
12.	इस जंगल में	–	दामोदर खड़से

———————————

संदर्भ ग्रंथः

1. अठारह उपन्यास : राजेंद्र यादव
2. हिंदी उपन्यास : सौ वर्ष – संपा रामदरष मिश्र
3. समकालीन हिंदी उपन्यास – डॉ विवेकी राय
4. उपन्यास : स्थिति और गति – डॉ चंद्रकांत बांदिवडेकर
5. आज का हिंदी उपन्यास – डॉ इंद्रनाथ मदान
6. प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यासों की षिल्पविधि : डॉ सत्यपाल चुघ
7. नई कहानी का स्वरूप विवेचन – डॉ इंदु रष्मि
8. नई कहानी के विविध प्रयोग – षषिभूषण पांडेय षीतांषु
9. समकालीन हिंदी कहानी – डॉ पुष्पपाल सिंह
10. नई काहानी की भूमिका – कमलेष्वर
11. नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति – देवीषंकर अवस्थी
12. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुषीलन– डॉ सुरेष बाबर
13. उत्तर षती का हिंदी साहित्य– संपा डॉ सुरेषकुमार जैन
14. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य– डॉ. राजेंद्र खैरनार

———————————————

प्रथम सत्र
प्रष्नपत्र 3 : विषेष स्तर
भारतीय साहित्यषास्त्र

उद्देष्यः

1. छात्रों को भारतीय साहित्यषास्त्र का परिचय देना।
2. छात्रों को भारतीय साहित्यषास्त्र के विकासक्रम से परिचित कराना।
3. छात्रों को भारतीय साहित्यषास्त्र के सिद्धांतों का ज्ञान कराना।
4. साहित्य और साहित्यषास्त्र के सहसंबंधों से छात्रों को अवगत कराना।
5. छात्रों को साहित्यषास्त्रीय चिंतन से परिचित कराना।
6. छात्रों को भारतीय साहित्यषास्त्र के सिद्धांतों में साम्य, वैषम्य एवं उसके कारणों का ज्ञान कराना।
7. छात्रों को साहित्यषास्त्रीय समीक्षा का महत्व अवगत कराना।
8. साहित्यषास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से छात्रों में समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्–श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. पी. पी. टी./भाषा प्रयोगषाला का प्रयोग।
5. अतिथि विषेषज्ञों के व्याख्यान ।

अध्ययनार्थ विषयः

1. **रस सिद्धांतः**
   रस का स्वरूप, भरतमुनि का रससूत्र, रस के अवयव (अंग), रस निष्पत्ति, रस निष्पत्ति संबंधी भट्टलोल्लट, षंकुक, भट्टनायक तथा अभिनव गुप्त द्वारा की गई व्याख्याओं का विवेचन, साधारणीकरण की अवधारणा, करुण रस का आस्वाद।
2. **अलंकार सिद्धांतः**

अलंकार षब्द की व्युत्पत्ति, परिभाषा, अलंकार सिद्धांत का स्वरूप, अलंकार और अलंकार्य, अलंकारों का मनोवैज्ञानिक आधार, अलंकार और रस, काव्य में अलंकार का स्थान।

3. **रीति सिद्धांतः**
   रीति षब्द की व्युत्पत्ति, रीति की परिभाषा, रीति संप्रदाय, रीति भेद, रीति और गुण, रीति और षैली।
4. **ध्वनि सिद्धांतः**
   ध्वनि षब्द की व्युत्पत्ति, ध्वनि की परिभाषा, ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि और स्फोट सिद्धांत, ध्वनि और षब्द–षक्ति, ध्वनि के भेद– अभिधामूलक ध्वनि (संलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि, असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य ध्वनि) और लक्षणामूलक ध्वनि, ध्वनि के आधार पर काव्य के भेद, ध्वनि सिद्धांत का महत्व।
5. **वक्रोक्ति सिद्धांतः**
   वक्रोक्ति की परिभाषा, कुंतक पूर्व वक्रोक्ति विचार, वक्रोक्ति सिद्धांत का स्वरूप, वक्रोक्ति के भेदों का सोदाहरण परिचय, वक्रोक्ति का महत्व।
6. **औचित्य सिद्धांतः**
   औचित्य का स्वरूप, आचार्य क्षेमेन्द्र पूर्व औचित्य विचार, आचार्य क्षेमेन्द्र का औचित्य विचार, औचित्य के भेद, अन्य सिद्धांतों के संदर्भ में औचित्य का महत्व।

———————————————

संदर्भ ग्रंथः

1. काव्यषास्त्र की रूपरेखा– डॉ. रामदत्त भारद्वाज
2. भारतीय काव्यषास्त्र के सिद्धांत– डॉ. कृष्णदेव षर्मा
3. काव्यषास्त्र– डॉ. भगीरथ मिश्र
4. भारतीय काव्यषास्त्र– डॉ. विजयपाल सिंह
5. भारतीय काव्यषास्त्र एवं पाष्चात्य साहित्य–चिंतन–डॉ. सभापति मिश्र
6. भारतीय एवं पाष्चात्य काव्यषास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ. बच्चन सिंह
7. भारतीय तथा पाष्चात्य काव्यषास्त्र–डॉ. सुरेषकुमार जैन एवं प्रा. महावीर कंड़ारकर
8. साहित्यषास्त्र के प्रमुख सिद्धांत–डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
9. रीतिकाव्य की भूमिका–डॉ. नगेंद्र
10. भारतीय काव्यषास्त्र–(खंड़–1 और 2)–आचार्य बलदेव उपाध्याय
11. भारतीय काव्यषास्त्र के सिद्धांत–डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त
12. भारतीय काव्यषास्त्र के सिद्धांत– डॉ. तेजपाल चौधरी
13. भारतीय तथा पाष्चात्य काव्यषास्त्र–प्रो. हरिमोहन
14. भारतीय काव्यषास्त्र के सिद्धांत–डॉ. गोविंद त्रिगुणायत
15. भारतीय काव्यषास्त्र के सिद्धांत–डॉ. जालिंदर इंगळे
16. भारतीय काव्यषास्त्र के सिद्धांत–डॉ. कृष्णदेव झारी

————————————

प्रथम सत्र

प्रष्नपत्र 4 : विषेष स्तर : वैकल्पिक

(अ) विषेष साहित्यकार : कबीर

उद्देष्यः

1. छात्रों को तत्कालीन परिस्थितियाँ (दार्षनिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक) के परिप्रेक्ष्य में कबीर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय देते हुए हिंदी को उनके प्रदेय की जानकारी देना।
2. छात्रों को कबीर की काव्यगत षक्ति और सीमाओं से परिचित कराना।
3. छात्रों को कबीर के काव्य की प्रासंगिकता से अवगत कराना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यामों / साधनों का प्रयोग।
4. पद प्रस्तुति।
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान

पाठ्य ग्रंथः

कबीर ग्रंथावली

संपादक : ष्यामसुदंर दास

प्रकाषक : नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

ससंदर्भ व्याख्या के लिए केवल निम्नलिखित छंद :

1. गुरुदेव कौ अंग : 3, 6, 12, 14, 15, 16, 21, 26, 33, 34 = 10
2. विरह कौ अंगः 4, 5, 6, 7, 9, 11, 12, 14, 15, 18, 20, 21, 22, 23, 25, 26, 33, 35, 41, 45 = 20

3. .परचा कौ अंग : 1, 3, 9, 10, 11, 12, 14, 16, 17, 21, 22, 24, 27, 31, 32, 35,36, 39, 43, 44, 45, 46 = 22
4. निहकर्मी पतिव्रता कौ अंग : 2, 3, 10, 11, 14 = 05
5. चितावणी कौ अंग : 1, 4, 8, 12, 16, 19, 20, 34, 44, 45 = 10
6. सूरा तन कौ अंग : 18, 19, 20, 21, 24, 26 = 06
7. काल कौ अंग : 1, 13, 14, 15, 20 = 05
8. विद्या कौ अंग : 2, 3, 4, 6, 8, 9, 10 = 07
9. पद : 1, 8, 11, 16, 40, 43, 55, 59, 92, 111, 117, 156, 180, 186, 198, 250, 251, 274, 290, 329, 331, 332, 338, 346, 394, 400, 402 = 27

अध्ययनार्थ विषयः

1. हिंदी की निर्गुण काव्यधारा का विकास
2. संत काव्य परंपरा और कबीर
3. कबीर की जीवनी और व्यक्तित्व
4. कबीर के धार्मिक विचार
5. कबीर का विद्रोह
6. कबीर के सामाजिक विचार
7. कबीर काव्य में समन्वय
8. कबीर का प्रेम तत्व और विरह भावना
9. कबीर का रहस्यवाद
10. कबीर के राम
11. कबीर की दार्षनिकता– ब्रह्म, जीव, माया, जगत, मोक्ष
12. कबीर की उलटबासियॉ और प्रतीक पद्धति
13. कबीर काव्य की प्रासंगिकता
14. कबीर का भक्त कवियों में स्थान

———————————————

संदर्भ ग्रंथः

1. कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी
2. कबीरः संपा विजयेंद्र स्नातक
3. कबीर की विचारधारा : डॉ गोविंद त्रिगुणायत
4. कबीर साहित्य की परंपरा : आ. परषुराम चतुर्वेदी
5. कबीर चितंन और सर्जन : संपा. आनंदप्रकाष दीक्षित
6. कबीर : एक विवेचन –डॉ सरनामसिंह षर्मा 'अरुण'
7. नाथ और संत साहित्य : डॉ नागेंद्रनाथ उपाध्याय
8. हिंदी संतों का उलटबाँसी साहित्य : डॉ रमेषचंद्र मिश्रा
9. निर्गुण कवियों का सामाजिक आदर्ष : विमल मेहता
10. कबीर साधना और साहित्य : डॉ प्रतापसिंह चौहान
11. कबीर एक अनुषीलन : डॉ रामकुमार वर्मा
12. कबीर का रहस्यवाद –डॉ रामकुमार वर्मा
13. युग पुरुष कबीर – रामचंद्र वर्मा
14. कबीर चिंतन –डॉ ब्रजभूषण षर्मा
15. कबीर : डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी का प्रक्षिप्त चिंतन– डॉ धर्मवीर भारती
16. कबीर के आलोचक–डॉ धर्मवीर

प्रथम सत्र

प्रष्नपत्र 4 : विषेष स्तर वैकल्पिक

आ) विषेष साहित्यकार : कवि तुलसीदास

पाठ्य पुस्तकें:

1. **रामचरित मानस– अयोध्या कांड़**
   प्रकाषक : जगत भारती प्रकाषन, सी–3–77, दूरवाणी नगर, ए. डी. ए. नैनी, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–2009, मूल्यः 80/–

   केवल निम्नलिखित पदः
   संसदर्भ के लिए पदः 1से 100 तक कुल 100 पद।

2. **विनयपत्रिका– संपादकः वियोगी हरि,**
   प्रकाषक : सस्ता साहित्य मंड़ल, एन–77, कनॉट सर्कल, नई दिल्ली–110 001
   संस्करण–छठवॉ : 1997 मूल्यः 75/–

   संसदर्भ के लिए पदः

   1, 5, 19, 36, 41, 48, 68, 78, 88, 101, 105, 106, 132, 153, 162,167, 173, 174, 179, 187, 189, 198, 212, 216, 254= 25 पद।

अध्ययनार्थ विषयः

1. तुलसीदासः व्यक्तित्व एवं कृतित्व– सामान्य परिचय
2. तुलसीदास की भक्ति भावना
3. तुलसीदास की दार्षनिकता
4. रामचरितमानस का कथानक
5. रामचरितमानस का महाकाव्यत्व
6. रामचरितमानसः चरित्र–चित्रण
7. तुलसीदास का मर्यादावाद

8. रामचरितमानसः प्रकृति–चित्रण
9. तुलसीदास का लोकनायकत्व
10. रामचरितमानसः भाषा–षैली
11. तुलसीदास के राम
12. तुलसीदास का हिंदी साहित्य में स्थान
13. विनयपत्रिका का हेतु
14. विनयपत्रिकाः वर्ण्य विषय
15. विनयपत्रिकाः समन्वय भाव
16. विनयपत्रिका में भक्ति
17. विनयपत्रिका में दास्य–भाव
18. विनयपत्रिका में तुलसी का मन को उद्‌बोधन
19. विनयपत्रिका में गीति–तत्व
20. विनयपत्रिका का कला–पक्ष
21. भक्ति काव्य में विनयपत्रिका का स्थान

————————————————————

संदर्भ ग्रंथ

1. तुलसी काव्य मीमांसा : डॉ उदयभानुसिंह
2. तुलसी दर्षन मीमांसा : डॉ उदयभानुसिंह
3. तुलसी और उनका काव्य : डॉ उदयभानुसिंह
4. तुलसीदास और उनका काव्य : रामनरेष त्रिपाठी
5. तुलसीदास और उनका युग : राजपति दीक्षित
6. तुलसी साहित्य के बदलते प्रतिमान : चंद्रभानु रावत
7. विष्वकवि तुलसी और उनका काव्य : डॉ रामप्रसाद मिश्र
8. तुलसी की साहित्य साधना : डॉ लल्लन राय
9. तुलसीदास : वस्तु और षिल्प –डॉ आनंदप्रकाष दीक्षित
10. तुलसी साहित्य में नीति, भक्ति और दर्षन : डॉ हरिष्चंद्र वर्मा
11. तुलसी साहित्य : विवेचन और मूल्यांकन–डॉ देवेंद्रनाथ षर्मा, डॉ. वचनदेव कुमार

12. तुलसी काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन : डॉ. जितेंद्रनाथ पांडेय
13. तुलसीदास : जीवनी और विचारधारा–डॉ राजाराम रस्तोगी
14. तुलसी दर्षन : डॉ बलदेवप्रसाद मिश्र
15. तुलसीदास : संपा. विष्वनाथ प्रसाद तिवारी
16. महाकवि तुलसीदास और युग संदर्भ : डॉ भगीरथ मिश्र
17. गोस्वामी तुलसीदास : डॉ अषोक कामत
18. तुलसी का काव्य सौदर्य : डॉ राममूर्ति त्रिपाठी
19. तुलसी साहित्य की भूमिका : रामरतन भटनागर
20. तुलसीदास : चिंतन और कला– संपा. डॉ. इंद्रनाथ मदान
21. रामचरितमानस : अयोध्याकांड – डॉ योंगेंद्रप्रताप सिंह
22. तुलसी का मानस : डॉ. मुंषीराम षर्मा
23. रामचरितमानस में भक्ति : डॉ सत्यनारायण षर्मा
24. तुलसी वाङ्मय विमर्ष : डॉ. कुंदनलाल जैन
25. मानस चरित्र कोष : डॉ. भ. ए. राजूरकर
26. तुलसी के भक्त्यात्मक गीत : डॉ वचनदेव कुमार
27. विनयपत्रिका : एक मूल्यांकन – डॉ हरिचरण षर्मा
28. विनयपत्रिका : दार्षनिक तथा कलात्मक विवेचन – डॉ. राजकुमार अवस्थी
29. तुलसी संदर्भ : डॉ नगेंद्र
30. गोस्वामी तुलसीदास : आ रामचंद्र षुक्ल
31. हिंदी के प्राचीन प्रतिनिधि कवि : द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
32. तुलसीदास और उनका काव्यः डॉ. रामदत्त भारद्वाज
33. रामचरितमानसः तुलनात्मक अनुषीलनः डॉ. सज्जनराम केणी
34. तुलसी की जीवनभूमिः डॉ. चंद्रबली पांडेय
35. विनयपत्रिकाः एक तुलनात्मक अध्ययनः डॉ. ओंकारप्रसाद त्रिपाठी
36. विनयपत्रिकाः आलोचना एवं भाष्यः डॉ. गोपीनाथ तिवारी
37. लोककवि तुलसीः डॉ. सरला षुक्ल
38. गोस्वामी तुलसीदासः डॉ. मायाप्रसाद पाण्डेय
39. तुलसी की भाषाः जनार्दन सिंह
40. तुलसीदासः काव्य कला और दर्षनः डॉ. रामगोपाल षर्मा

————————————————

प्रथम सत्र

प्रष्नपत्र 4 : विषेष स्तर वैकल्पिक

इ½ विषेष साहित्यकार : नाटककाकार सुरेंद्र वर्मा

उद्देष्य :

1. नाटक के स्वरूप और विषेषताओं से परिचित कराना ।
2. हिंदी नाट्य साहित्य के विकासक्रम की जानकारी देना ।
3. विषय, षिल्प, भाषा, मंचीयता आदि आधारों पर नाटकों से परिचित कराना ।
4. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों के आधार पर नाट्यकला से अवगत कराना ।
5. हिंदी नाट्य साहित्य में सुरेंद्र वर्मा के स्थान और योगदान से परिचित कराना ।

पाठ्यपुस्तकें :–

1. **सेतुबंध – ¼तीन नाटक में संकलित½ सुरेंद्र वर्मा, प्र.सं. 1972**
2. **सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक– सुरेंद्र वर्मा–प्र.सं.1973**
3. **आठवॉ सर्ग – सुरेंद्र वर्मा – प्र.सं. 1976 ।**
4. **रति का कंगना – सुरेंद्र वर्मा ।**

अध्ययनार्थ विषय :–

1. भारतीय एवं पाष्चात्य दृष्टि से नाटक के स्वरूप एवं तत्वों का परिचय
2. हिंदी नाटक साहित्य का विकास
3. हिंदी रंगमंच का विकास
4. हिंदी नाटक और रंगमंच
5. हिंदी नाटक और प्रयोगधर्मिता
6. सुरेंद्र वर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व
7. सुरेंद्र वर्मा का नाट्यचिंतन
8. पठित नाटकों के आधार पर सुरेंद्र वर्मा की नाट्यकला का विवेचन
9. हिंदी नाटक को सुरेंद्र वर्मा का योगदान
10. हिंदी रंगमंच के क्षेत्र में सुरेंद्र वर्मा का स्थान–सामान्य परिचय

———————————————

संदर्भ ग्रंथ :

1. हिंदी नाटक : प्रगति और प्रभाव – डॉ. दषरथ ओझा
2. हिंदी नाटक : सिद्धांत और विवेचन – गिरीष रस्तोगी
3. आधुनिक हिंदी नाटक : डॉ. नगेंद्र
4. हिंदी नाटकों की षिल्प विधि का विकास – डॉ. षांति मलिक
5. आधुनिक हिंदी नाटक : चरित्र सृष्टि के आयाम – डॉ. लक्ष्मी राय
6. हिंदी नाटक आज तक : डॉ. वीणा गौतम
7. नई–रंगचेतना और हिंदी नाटककार – जयदेव तनेजा
8. आधुनिक हिंदी नाटकों की प्रयोगधर्मिता – डॉ. सत्यवती त्रिपाठी
9. समसामयिक हिंदी नाटकों के खंड़ित व्यक्तित्व अंकन – डॉ. टी. आर. पाटील
10. हिंदी रंगमंच : विविध आयाम : डॉ. रेखा गुप्ता
11. बीसवी षताब्दी का हिंदी नाटक और रंगमंच – गिरीष रस्तोगी
12. पहला रंग : देवेंद्रराज अंकुर
13. साठोत्तर हिंदी नाटकों का रंगमंचीय अध्ययन – राकेष वत्स
14. सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में मंचीयता – देवेंद्र गुप्ता
15. आज के हिंदी रंग नाटक : परिवेष और परिदृष्य – जयदेव तनेजा
16. नाट्य परिवेष – कन्हैयालाल नंदन

प्रथम सत्र

प्रष्न पत्र 4 : विषेष स्तर वैकल्पिक

ई) विषेष साहित्यकार : कवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

उद्देष्यः

1. विषेष साहित्यकार के रूप में कवि दिनकर के साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय देना।
2. युगीन पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में दिनकर की काव्य–कृतियों का परिचय देना।
3. निर्धारित प्रमुख रचनाओं के सूक्ष्म अध्ययन तथा अन्य कृतियों के सामान्य अध्ययन के माध्यम से कवि दिनकर की काव्यकला से परिचित कराना।
4. कवि दिनकर की निर्धारित रचनाओं के आस्वादन एवं मूल्यांकन की दृष्टि निर्माण करना।
5. कवि के रूप में दिनकर के योगदान से परिचित कराना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक्–श्राव्य माध्यामों / साधनों का प्रयोग।
4. परिचर्चा ।
5. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान।

अध्ययन के लिए काव्य–रचनाएँः

1. **कुरुक्षेत्र**
2. **उर्वषी**
3. **हुंकार**
4. **बापू**

अध्ययनार्थ विषयः

1. नई कविता और दिनकर
2. जन–जागरण संबंधी आधुनिक काव्य–धारा में दिनकर का स्थान
3. दिनकर : जीवनवृत्त एवं कृतित्व
4. दिनकर के प्रबंध काव्य
5. दिनकर के काव्य में प्रकृति–चित्रण
6. दिनकर की काव्य प्रवृत्तियाँ
7. राष्ट्रीय कवि दिनकर
8. दिनकर के काव्य में प्रेमभाव
9. दिनकर के काव्य में युद्ध और षांति

10. दिनकर के काव्य में प्रगतिवादी भावनाएँ
11. दिनकर के काव्य में आस्था एवं विष्वास
12. दिनकर के काव्य में दार्षनिकता
13. दिनकर के काव्य में प्रकृति और प्रेम
14. दिनकर का काव्य–सौष्ठव
15. कुरुक्षेत्र का काव्य–सौष्ठव
16. कुरुक्षेत्र काव्य का अनुभूति–पक्ष
17. कुरुक्षेत्र काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष
18. उर्वषी काव्य का काव्य–सौष्ठव
19. उर्वषी काव्य का अनुभूति–पक्ष
20. उर्वषी काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष
21. हुंकार काव्य का काव्य–सौष्ठव
22. हुंकार काव्य का अनुभूति–पक्ष
23. हुंकार काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष
24. बापू काव्य का काव्य–सौष्ठव
25. बापू काव्य का अनुभूति–पक्ष
26. बापू काव्य का अभिव्यक्ति पक्ष

————————————————

संदर्भ ग्रंथः

1. युगाचरण दिनकर– डॉ. सावित्री सिन्हा

2. दिनकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व– कु. पद्मावती एम. ए.
3. हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि– डॉ. द्वारकाप्रसाद सक्सेना
4. राष्ट्रीय कवि दिनकर–षेखरचंद्र जैन
5. रामधारी सिंह 'दिनकर'–राजेष षर्मा
6. दिनकर का उर्वषी–राजनारायण राय
7. राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कला– डॉ. षेखरचंद्र जैन
8. नयी कविता स्वरूप और समस्या– डॉ. जगदीष गुप्त
9. नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर– डॉ. संतोष कुमार तिवारी
10. रामधारी सिंह 'दिनकर'– लोकदेव नेहरू
11. दिनकर और उनकी काव्य–कृतियाँ– पं. षिवचंद्र षर्मा
12. उर्वषी संवेदना और षिल्प– डॉ. गीकाराम षर्मा
13. आधुनिक काव्य– डॉ. भगीरथ मिश्र
14. दिनकर का काव्य– लीलाधर त्रिपाठी
15. दिनकर और उनकी साधना– प्रताप जैस्वाल
16. छायावादोत्तर हिंदी कविता प्रमुख प्रवृत्तियाँ– डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय
17. दिनकर के काव्य में मानवतावादी प्रेम–चेतना– डॉ. मधुबाला
18. दिनकर के प्रबंध काव्य : लोक तत्व एवं षिल्प– डॉ. आर. पी. एस. चौहान
19. हिंदी के खण्डकाव्यों में युगबोध– डॉ. राज भारद्वाज
20. दिनकर काव्य में वस्तु–विधान– डॉ. इन्दु वषिष्ठ
21. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य में महाभारत के पात्र – डॉ. जे. आर. बोरसे

——————————

पुणे विष्वविद्यालय, पुणे

द्वितीय सत्र

प्रष्नपत्र 5 : सामान्य स्तर

मध्ययुगीन हिंदी काव्य

(सूरदास, बिहारी तथा भू"ाण)

उदेद्ष्यः

1. हिंदी का आदिकालीन, भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन काव्य प्रवृतियों की जानकारी देना ।
2. तत्कालीन प्रमुख कवि तथा उनकी कृतियों से परिचय कराना ।
3. पाठ्य कृतियों के संदर्भ में समीक्षा की क्षमता बढ़ाना ।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्– श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. अध्ययन यात्रा ।
5. अतिथि विषेषज्ञों के व्याख्यान ।

पाठ्य पुस्तकेंः

1) सूरदास : भ्रमरगीत सार
संपादक : आचार्य रामचंद्र षुक्ल
प्रकाषक : श्री गोपालादास पोरवाल, साहित्य सेवा सदन, वाराणसी 1
ससंदर्भ व्याख्या के लिए पद :
पद क्रम – 21 से 60 = 40
2) बिहारी रत्नाकर : श्री. जगन्नाथ 'रत्नाकर'
प्रकाषक : प्रकाषन संस्थान, नई दिल्ली, संस्करण– 2006, मूल्य– 60/–

ससंदर्भ व्याख्या के लिए दोहे :

1, 22, 25, 32, 35, 38, 45, 60, 67, 73, 76, 94, 126, 152, 181, 201, 217, 251, 277, 283, 301, 318, 322, 345, 373, 388, 425, 472, 496, 530, 543, 588, 610, 632, 642, 677, 687, 689, 710, 713 = 40

3) रीति काव्य धारा : संपादक : डॉ रामचंद्र तिवारी / डॉ रामफेर त्रिपाठी
प्रकाषक : विष्वविदयालय प्रकाषन, वाराणसी
ससंदर्भ व्याख्या के लिए कवि भूषण के पद : 01 से 21 = 21

अध्ययनार्थ कविः

1) सूरदास
2) बिहारी
3) भूषण

अध्ययनार्थ विषयः

1. भ्रमरगीत की दार्षनिक पृष्ठभूमि
2. सूरदास के काव्य में योग बनाम भक्ति
3. सूरदास के काव्य में वियोग वर्णन
4. भ्रमरगीत : एक उपालंभ काव्य
5. सूर के भ्रमरगीत की विषेषताएँ
6. सूर की गोपियाँ
7. सूर के उद्धव
8. सूर की गोपियों का वागवैदग्ध्य
9. भ्रमरगीत में व्यंजना
10. भ्रमरगीत में विरह वर्णन
11. भ्रमरगीत में प्रकृति चित्रण
12. भ्रमरगीत का कलापक्ष
13. सूर की भाषा
14. रीतिसिद्ध कवि बिहारी
15. बिहारी का षृंगार वर्णन
16. बिहारी का संयोग वियोग निरूपण
17. बिहारी का सौदर्य चित्रण
18. बिहारी की बहुज्ञता
19. बिहारी की भक्तिभावना

20. मुक्तककार बिहारी
21. बिहारी का षृंगारेतर काव्य
22. बिहारी का काव्य सौंदर्य
23. बिहारी की अलंकार योजना
24. बिहारी की भाषा षैली
25. सतसई परंपरा में बिहारी का स्थान
26. भूषण कालीन परिस्थितियाँ
27. भूषण के काव्य में वीरत्व
28. भूषण के काव्य में राष्ट्रीय चेतना
29. भूषण के काव्य के विषय
30. भूषण का काव्य षिल्प
31. भूषण का सौंदर्य चित्रण
32. भूषण के काव्य में अलंकार योजना
33. भूषण के काव्य की भाषा
34. भूषण के काव्य का षैली
35. भूषण काव्य में रस योजना
36. हिंदी काव्य को भूषण का योगदान

———————————

संदर्भ ग्रंथः

1. सूरदास और उनका साहित्य : डॉ मुंषीराम षर्मा
2. भारतीय साधना और सूर साहित्य – डॉ हरवंषलाल षर्मा
3. सूर की काव्य कला – मनमोहन गौतम
4. सूर साहित्य – डॉ हजारीप्रसाद द्विवेदी
5. सूर की भाषा – डॉ प्रेमनारायण टंड़न
6. कृष्णकाव्य और सूर : सांस्कृतिक संदर्भ – डॉ प्रेमषंकर
7. सूरदास – आ रामचंद्र षुक्ल
8. सूरदास : एक पुनरावलेकन – डॉ ओम प्रकाष षर्मा
9. महाकवि सूरदास – डॉ. आ. नंददुलारे वाजपेजी
10. भ्रमरगीत का काव्य सौदर्य – डॉ सत्येंद्र पारिख
11. भ्रमरगीत : एक अन्वेषण – डॉ सत्येंद्र
12. सूर की गोपिका : एक मनोवैज्ञानि अध्ययन – डॉ प्रभारानी भाटिया
13. सूरदास – डॉ ब्रजेष्वर वर्मा
14. बिहारी का तुलनात्मक अध्ययन – पं पद्मसिंह षर्मा
15. बिहारी और उनका साहित्य – डॉ हरवंषलाल षर्मा / डॉ परमानंद षास्त्री
16. बिहारी काव्य का मूल्यांकन – किषोरी लाल
17. षट्कवि : विवेचनात्मक अध्ययन – डॉ ओमप्रकाष षर्मा
18. सूर की मौलिकता – डॉ वेदप्रकाष षास्त्री
19. महाकवि विदयापति – डॉ कृष्णानंद पीयूष
20. हिंदी के प्राचीन कवि – डॉ दयानंद षर्मा
21. रीतिकालीन काव्य पर संस्कृत काव्य का प्रभाव – डॉ दयानंद षर्मा
22. संक्षिप्त भूषण – डॉ. भगवानदास तिवारी
23. भूषण ग्रंथावली– डॉ. विष्वनाथ प्रसाद मिश्र

द्वितीय सत्र

प्रष्नपत्र 6 : विषेष स्तर

आधुनिक हिंदी नाटक और निबंध

उद्देष्यः

1. गद्य की प्रमुख विधाओं के तात्विक स्वरूप का परिचय देना।
2. प्रमुख गद्य विधाओं के विकासक्रम की जानकारी देना।
3. विधा विषेष के तात्विक स्वरूप एवं ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विषेष का महत्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता बढ़ाना।
4. रचना के आस्वादन एवं समीक्षण की क्षमता विकसित करना।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक् –श्राव्य माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।
4. अतिथि विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्य पुस्तकेंः

1} नाटक : अभंग गाथा – नरेंद्र मोहन,
प्रकाषक : जगतराम एण्ड सन्स्, 24/4855 अन्सारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली –110002
प्रथम प्रकाषनः 2000 मूल्यः 80रु.

2} हिंदी निबंध माला
हिंदी निबंध माला : संपादक–– डॉ. सुरेष बाबर, डॉ. नीला बोर्वणकर
प्रकाषक – अरुणोदय प्रकाषन,
21– ए अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली– 110 002

निबंध का नाम **निबंधकार**

1.	उत्साह	–	आ. रामचंद्र षुक्ल
2.	पुस्तकालयः मिलन का उत्तम मार्ग	–	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी
3.	नीलकंठ उदास	–	कुबेरनाथ राय
4.	संस्कृति है क्या?	–	रामधारी सिंह दिनकर
5.	ताज	–	डॉ.रघुवीर सिंह
6.	ठूँठा आम –	–	भगवतषरण उपाध्याय
7.	मिले तो पछताए	–	इंद्रनाथ मदान
8.	कलाकार का सत्य	–	विष्णू प्रभाकर
9.	अंधी जनता और लंगडा जनतंत्र	–	विद्यानिवास मिश्र
10.	समाधि लेख	–	डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय
11.	बुद्धिजीवी	–	डॉ. षंकर पुणतांबेकर
12.	पानी है अनमोल	–	डॉ. श्रीराम परिहार

अध्ययनार्थ विषयः

1. हिदी नाटक तथा निबंध विधाओं का विकास ।
2. 'अभंग गाथा' नाटक की षिल्पगत संरचना का परिचय ।
3. पठित निबंधों की विषेषताएँ ।
4. पठित निबंधों में विचारात्मकता ।
5. पठित निबंधों की शषा–षैली ।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी रंगकर्म : दषा और दिषा – डॉ. जयदेव जनेजा

2. समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच – डॉ. जयदेव तनेजा
3. समसामयिक हिंदी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व अंकन – डॉ. टी. आर. पाटील
4. आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता – डॉ. सत्यवती त्रिपाठी
5. हिंदी नाटक : आज–कल – डॉ. जयदेव तनेजा
6. सातवें दषक के प्रतीकात्मक नाटक – रमेष गौतम
7. युगबोध और हिंदी नाटक – डॉ. सरिता वषिष्ठ
8. नव्य हिंदी नाटक –डॉ. सावित्री स्वरूप
9. हिंदी के प्रतिनिधि निबंधकार –डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
10. हिंदी साहित्य में निबंध और निबंधकार –डॉ. गंगाप्रसाद गुप्त
11. हिंदी के प्रमुख निबंधकार : रचना और षिल्प – डॉ. गणेष खरे
12. हिंदी निबंध और निबंधकार – डॉ. ठाकुर प्रसाद सिंह
13. उत्तरषती का हिंदी साहित्य : संपा. डॉ. सुरेषकुमार जैन
14. तुका म्हणे, भाग 1 और 2 (मराठी)– डॉ. दिलीप धोंड़गे

————————————————

द्वितीय सत्र
प्रष्नपत्र 7 : विषेष स्तर

पाष्चात्य साहित्यषास्त्र

उद्देष्यः

1. छात्रों को पाष्चात्य साहित्यषास्त्र का परिचय देना ।
2. छात्रों को पाष्चात्य साहित्यषास्त्र के विकासक्रम का परिचय देना ।
3. छात्रों को पाष्चात्य साहित्यषास्त्र के सिद्धांतों का ज्ञान कराना ।
4. छात्रों को साहित्यषास्त्रीय समीक्षा का महत्व अवगत कराना।
5. छात्रों को पाष्चात्य साहित्यषास्त्र के सिद्धांतो में साम्य, वैषम्य एवं उसके कारणों का ज्ञान करना ।
6. छात्रों को नई समीक्षा के सिद्धांतो का ज्ञान कराना ।
7. छात्रों को आलोचना की प्रणालियों तथा नई अवधारणाओं का परिचय देना ।
8. साहित्यषास्त्रीय अध्ययन के द्वारा छात्रों में समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना ।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक–श्राव्य माध्यमों / साधनों का प्रयोग ।
4. पी. पी. टी./ भाषा प्रयोगषाला का प्रयोग कराना।
5. अतिथि विषेषज्ञों के व्याख्यान ।

अध्ययनार्थ विषयः

1. **प्लेटो : काव्य सिद्धांत, अनुकरण सिद्धांत**
2. **अरस्तू के काव्य सिद्धांत :**

क) **अनुकरण सिद्धांत** : अनुकरण सिद्धांत की व्याख्या, प्लेटो और अरस्तू के अनुकरण विषयक विचारों की तुलना ।

ख) **विरेचन सिद्धांत** : स्वरूप विवेचन, विरेचन का महत्व, त्रासदी विवेचन ।

3 **उदात्त सिद्धांत :** उदात्त की व्याख्या, उदात्त के अंतरंग तथा बहिरंग तत्व, काव्य में उदात्त का महत्व, लोंजाइनस का योगदान ।

4 आई. ए. रिचर्डस् का मनोवैज्ञानिक मूल्यवाद और संप्रेषण सिद्धांत :

काव्य मूल्यों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या, संप्रेषण सिद्धांत की परिभाषा और स्वरूप, संप्रेषण सिद्धांत का महत्व, आई. ए. रिचर्डस् का योगदान ।

5. इलियट का निर्वैयक्तिकता सिद्धांत और वस्तुनिष्ठ प्रतिरूपता सिद्धांत :
इलियट की निर्वैयक्तिकता संबंधी अवधारणा, वस्तुनिष्ठ प्रतिरूपता सिद्धांत, इलियट का योगदान ।

6. विविध वाद तथा आलोचना की प्रणालियाँ :

क) प्रतीकवाद, बिंबवाद, अभिव्यंजनावाद, अस्तित्ववाद, यथार्थवाद, संरचनावाद, विखंड़नवाद, उत्तर आधुनिकता– (केवल स्वरूप विवेचन तथा महत्व)

ख) आलोचना की विभिन्न प्रणालियॉं– सैद्धांतिक, व्याख्यात्मक, मनोवैज्ञानिक, मार्क्सवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक तथा सौंदर्यषास्त्रीय आलोचना।

———————————

संदर्भ ग्रंथ :

1. अरस्तू का काव्यषास्त्र – डॉ. नगेंद्र
2. समीक्षालोक – डॉ. भगीरथ मिश्र
3. पाष्चात्य काव्यषास्त्र के सिद्धांत – डॉ. कृष्णदेव षर्मा
4. पाष्चात्य काव्यषास्त्र– डॉ. देवेंद्रनाथ षर्मा
5. पाष्चात्य काव्यषास्त्र के सिद्धांत – डॉ. षांतिस्वरुप गुप्त
6. पाष्चात्य काव्यषास्त्र : अधुनातन संदर्भ – डॉ. सत्यदेव मिश्र
7. पाष्चात्य साहित्य सिद्धांत : एक विष्लेषण – डॉ. ओमप्रकाष षर्मा
8. आलोचना के आधुनिकतावाद और नई समीक्षा – डॉ. षिवकरण सिंह
9. उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनावाद – सुधीष पचौरी
10. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्ष – सुधीष पचौरी
11. उत्तर आधुनिकता : कुछ विचार, संपा. देवीषंकर नवीन, सुषांतकुमार मिश्र
12. भारतीय एवं पाष्चात्य काव्यषास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन– डॉ. बच्चनसिंह
13. पाष्चात्य साहित्यालोचन और हिंदी पर उसका प्रभाव – डॉ. रवींद्रसहाय वर्मा
14. हिंदी आलोचना : उद्भव और विकास : डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
15. आधुनिक समीक्षा : डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
16. तुलनात्मक साहित्यषास्त्र – डॉ. विष्णुदत्त राकेष
17. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार – डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल
18. पाष्चात्य काव्यषास्त्र के सि़द्धांत – डॉ. मैथिलीप्रसाद भारद्वाज
19. पाष्चात्य काव्यषास्त्र के सिद्धांत –डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
20. पाष्चात्य साहित्यलोचन और हिंदी पर उसका प्रभाव– डॉ. रवींद्रसहाय वर्मा
21. तुलनात्मक साहित्यषास्त्र– डॉ. विष्णुदत्त राकेष
22. आधुनिक समीक्षा– डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
23. साहित्य : विविध वाद – डॉ. ओमप्रकाष षर्मा

———————————————

द्वितीय सत्र

प्रष्नपत्र 8 : विषेष स्तर (वैकल्पिक)
विषेष विधा तथा अन्य

(क) हिंदी उपन्यास

उद्देष्यः

1. छात्रों को उपन्यास विधा का तात्विक परिचय देना।
2. हिंदी विधा के विकास की जानकारी देना ।
3. हिंदी उपन्यास की विभिन्न प्रवृत्तियों से छात्रों को अवगत कराना।
4. हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त मानवी जीवन का परिचय देना।
5. हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त जीवन विषयक दृष्टिकोण का मूल्यांकन कराना।
6. उपन्यास विधा का अन्य विधाओं के साथ तुलनात्मक परिचय देना।
7. छात्रों में उपन्यास साहित्य का आस्वादन, अध्ययन एवं मूल्यांकन की क्षमता बढाना।
8. उपन्यास विधा की ओर सर्जक, समीक्षा, अनुवाद एवं षोध की दृष्टि से छात्रों को प्रेरित करना, आदि।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य साधनों/ माध्यमों का प्रयोग।
4. पी. पी. टी./भाषा प्रयोगषाला का प्रयोग।
5. विषेषज्ञों के व्याख्यान।
6. अध्ययन यात्रा का आयोजन करना।

विषेष अध्ययन के लिए उपन्यासः

1. **चित्रलेखा– भगवतीचरण वर्मा**
   प्रकाषक– राजकमल प्रकाषन प्रा.लि., 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली.
2. **गोदान– प्रेमचंद**
   प्रकाषक– राजकमल प्रकाषन प्रा.लि., 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली
3. **अलग अलग वैतरणी – षिवप्रसाद सिंह**
   प्रकाषक – लोकभारती प्रकाषन, इलाहाबाद
4. **परिषिष्ट – गिरिराज किषोर**

प्रकाषक– राजकमल प्रकाषन प्रा.लि., 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली

अध्ययनार्थ विषयः

1. उपन्यास की परिभाषा, स्वरूप तथा उपन्यास के तत्व।
2. हिंदी उपन्यास का विकासक्रम– प्रेमचंद पूर्व उपन्यास, प्रेमचंद युगीन उपन्यास, प्रेमचंदोत्तर उपन्यास।
3. हिंदी उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ– सामाजिक, तिलस्मी, जासूसी, राजनीतिक, आँचलिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, जीवनीपरक उपन्यास आदि का अध्ययन।
4. उपन्यासों में भाव पक्ष तथा कला पक्ष का महत्व।
5. उपन्यास की विविध षैलियों का अध्ययन–वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, पूर्वदीप्ति, चेतनाप्रवाही, संवादात्मक, पत्रात्मक, डायरी आदि।
6. चित्रलेखा, गोदान, अलग–अलग वैतरणी, परिषिष्ट उपन्यासों का अभिव्यक्ति पक्ष तथा कला पक्ष।
7. चित्रलेखा, गोदान, अलग–अलग वैतरणी और परिषिष्ट उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण।
8. चित्रलेखा, गोदान, अलग–अलग वैतरणी और परिषिष्ट उपन्यासों का विषेष अध्ययन।

———————————

संदर्भ ग्रंथः

1. हिंदी का गद्य साहित्य– डॉ. रामचंद्र तिवारी
2. उपन्यास स्थिति और गति– डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर
3. उपन्यास का काव्यषास्त्र– डॉ. बच्चन सिंह
4. उपन्यास की षर्त– जगदीष नारायण श्रीवास्तव

5. उपन्यास– स्वरूप और संवेदना राजेंद यादव
6. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन– डॉ. विनय चौधरी
7. षिवप्रसाद सिंह का उपन्यास साहित्य – डॉ. राजेन्द्र खैरनार
8. महाकाव्यात्मक उपन्यासों की षिल्पविधि – डॉ. षंकर मुदगल
9. प्रगतिवादी हिंदी उपन्यास– डॉ. बदरी प्रसाद
10. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य– डॉ. राजेंद्र खैरनार
11. श्रीलाल षुक्ल के उपन्यासों का षिल्प विधान– डॉ. पी. व्ही. कोटमे
12. गिरिराज किषोर का उपन्यास साहित्य एक अनुषीलन– डॉ. सुरेष साळुंके
13. साहित्यिक विधाएँः सैद्धांतिक पक्ष– डॉ. मधु धवन
14. हिंदी साहित्य नए क्षितिज– डॉ षषिभूषण सिंहल
15. हिंदी उपन्यास समकालीन विमर्ष– डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी
16. आलोचना की सामाजिकता– मैनेजर पांडेय
17. समकालीन हिंदी उपन्यासः वर्ग एवं वर्ण संघर्ष– जालिंदर इंगले
18. आँचलिक उपन्यासों में वर्ण एवं वर्ग संघर्ष– डॉ. अषोक धुलधुले
19. कथाकार संजीव– संपा. डॉ. गिरीष काषिद
20. आधुनिक हिंदी उपन्यास, भाग–1 – संपा भीष्म साहनी
21. आधुनिक हिंदी उपन्यास, भाग–2 – संपा डॉ. नामवर सिंह
22. प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास–नए मूल्य–षषि गुप्ता
23. प्रेमचंद का सौंदर्यषास्त्र– संपा–नंदकिषोर नवल
24. प्रेमचंद के उपन्यास कथा संरचना– डॉ. मीनाक्षी श्रीवास्तव
25. षिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य का समाजषास्त्रीय अध्ययन– डॉ. टी. मीना कुमारी
26. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में चित्रित समाज जीवन– डॉ. विनय चौधरी
27. हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में दलित जीवन – डॉ. भरत सगरे
28. भीष्म साहनी के साहित्य का अनुषीलन– डॉ. सुरेष बाबर
29. हिंदी उपन्यास सृजन और सिद्धांत– नरेंद्र कोहली
30. हिंदी उपन्यासों की दिषाएँ–डॉ वेदप्रकाष अमिताभ
31. गोदानः संवेदना और षिल्प– डॉ. चंद्रषेखर कर्ण
32. हिंदी के श्रेष्ठ उपन्यास और उपन्यासकार – डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना

द्वितीय सत्र

प्रष्नपत्र 8 : विषेष स्तर (वैकल्पिक)
विषेष विधा तथा अन्य

(ख) हिंदी यात्रा साहित्यः स्वरूप और विकास

उद्देष्यः

1. छात्रों को यात्रा साहित्य विधा का तात्विक परिचय देना।
2. हिंदी विधा के विकास की जानकारी देना ।
3. हिंदी यात्रा साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों से छात्रों को अवगत कराना।
4. हिंदी यात्रा साहित्य में अभिव्यक्त मानवी जीवन का परिचय देना।
5. हिंदी यात्रा साहित्य में अभिव्यक्त जीवन विषयक दृष्टिकोण का मूल्यांकन करना।
6. यात्रा साहित्य विधा का अन्य विधाओं के साथ तुलनात्मक परिचय देना।
7. छात्रों में यात्रा साहित्य का आस्वादन, अध्ययन एवं मूल्यांकन की क्षमता बढाना।
8. यात्रा साहित्य विधा की ओर सर्जक, समीक्षा, अनुवाद एवं षोध की दृष्टि से छात्रों को प्रेरित करना, आदि।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा।
3. दृक–श्राव्य साधनों/ माध्यमों का प्रयोग।
4. पी. पी. टी./भाषा प्रयोगषाला का प्रयोग।
5. विषेषज्ञों के व्याख्यान।
6. अध्ययन यात्रा का आयोजन करना।

अध्ययनार्थ विषयः

यात्रा साहित्य

1. यात्रा : परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र
2. यात्रा साहित्यः परंपरा और विकास
3. हिंदी यात्रा साहित्यः विकासक्रम
4. यात्रा साहित्य की विषेषताएँ
5. साहित्य में यात्रा परंपराएँ
6. यात्रा साहित्यः तत्व विवेचन
7. यात्रा साहित्य का अन्य गद्य विधाओं से संबंध
8. यात्रा साहित्य का वर्गीकरण
9. भारतेंदु युग

10. द्विवेदी युग
11. उत्तर द्विवेदी युग
12. स्वातंत्र्योत्तर युग
13. उत्तरषती का युग
14. इक्कीसवीं सदी

अध्ययनार्थ रचनाएँ:

1. **मेरी जीवन यात्रा, भाग 2– राहुल सांकृत्यायन**
2. **एक बूँद सहसा उछली– सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'**
3. **चीड़ों पर चाँदनी– निर्मल वर्मा**
4. **सूर्य मंदिरों की खोज में–डॉ. ष्याम सिंह षषि**

संदर्भ ग्रंथ:

1. हिंदी यात्रा–साहित्य : स्वरूप और विकास– डॉ. मुरारीलाल षर्मा
2. यात्रा–साहित्य का उद्‌भव और विकास – डॉ.सुरेंद्र माथुर
3. यात्रा साहित्य – डॉ. तुकाराम पाटील, डॉ. नीला बोर्वणकर
4. मेरी विष्व यात्राएँ– डॉ. ष्याम सिंह षषि
5. घुमक्कड़ षास्त्र– राहुल सांस्कृत्यायन
6. यात्रा–साहित्य विधा : षास्त्र और इतिहास– डॉ. बापूराव देसाई
7. कुछ रंग कुछ गंध– सर्वेष्वर दयाल सक्सेना
8. यात्रा साहित्य– पं. माधवप्रसाद मिश्र
9. यात्रा साहित्य– स्वामी सत्यदेव परिव्राजक
10. यात्रा–साहित्य– डॉ. भगवतषरण उपाध्याय
11. भाषा (भारतीय यायावर साहित्य विषेषांक) मई–जून– 2006, वर्ष–45, अंक–5, केंद्रीय हिंदी निदेषालय, नई दिल्ली
12. यायावर साहित्य : अवधारणा और अवदान (राहुल सांकृत्यायन और डॉ. ष्याम सिंह षषि के संदर्भ में) – डॉ. तुकाराम पाटील, माधुरी आर्य

द्वितीय सत्र

प्रष्नपत्र 8 : विषेष स्तर (वैकल्पिक)
विषेष विधा तथा अन्य

(ग) प्रयोजनमूलक हिंदी

उद्देष्यः

1. छात्रों को हिंदी भाषा की प्रमुख प्रयुक्तियों और प्रयोजनमूलक षैलियों का परिचय देना ।
2. छात्रों को हिंदी में कम्प्यूटर के प्रयोग की विधि से अवगत कराना ।
3. छात्रों में हिंदी के कार्य साधक प्रयोग की कुषलता विकसित करना ।
4. छात्रों को पत्राचार के विविध प्रकारों की जानकारी कराना ।
5. छात्रों में अन्य भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद की क्षमता को विकसित करना ।
6. छात्रों को पारिभाषिक षब्दावली के माध्यम से प्रयोजनमूलक हिंदी से परिचित करना ।
7. छात्रों को विज्ञापन तंत्र से परिचित कराकर विज्ञापन के व्यावहारिक ज्ञान को वृद्धिंगत करना ।
8. छात्रों में राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं सामाजिक प्रतिबद्धता की भावना विकसित करना ।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक् – श्रव्यो माध्यमो /साधनों का प्रयोग ।
4. राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न कार्यालयों की अध्ययन यात्रा ।
5. विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत अधिकारी विद्वानों के व्याख्यान ।

पाठ्यक्रम

1) **हिंदी भाषा और उसके प्रयोजनमूलक रूपः**

क) प्रयोजनमूलक हिंदी : परिभाषा एवं स्वरूप।

ख) हिंदी भाषा के विविध रूप – सामान्य भाषा, मातृभाषा, माध्यम भाषा, संपर्क भाषा, अंतर्राष्ट्रीय भाषा ।

ग) प्रयोजनमूलक हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियाँ

2) **कार्यालयीन हिंदीः**

क) राजभाषा हिंदी :संवैधानिक प्रावधान, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य ।

ख) कार्यालयीन हिंदी : स्वरूप और विषेषताएँ

ग) कार्यालयीन हिंदी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार–प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण आदि।

घ) प्रयुक्ति (रजिस्टर) की अवधारणा

3) **विज्ञापन लेखनः**

क) विज्ञापन लेखन : विज्ञापन का स्वरूप, प्रकार और महत्व, भाषिक विषेषताएँ, विज्ञापन लेखन, अभ्यास ।

ख) आजीविकापरक क्षेत्र

4) **अनुवादः**

क) अनुवादः परिभाषा और स्वरूप, विषेषताएँ और प्रकार

ख) हिंदी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका

ग) साहित्यानुवादः काव्यानुवाद और उसकी समस्याएँ

घ) कार्यालयी हिंदी और अनुवाद

च) कोष–कार्य

छ) सारानुवाद

ज) दुभाषिया प्रविधि

5) **पारिभाषिक षब्दावली**ः

परिभाषा, षब्द की विषेषताएँ, षब्द के प्रकार, षब्द निर्माण की प्रवृत्तियाँ, षब्दों की रचना, षब्द और उनके प्रयोग से संबंद्ध अषुद्धियाँ

6) **हिंदी कम्प्यूटिंगः**

क) कम्प्यूटरः परिचय एवं महत्व

ख) कम्प्यूटर और भाषा प्रयोग

ग) वेब पब्लिषिंग–परिचय, विषेषताएँ

घ) हिंदी के वेब साईटस् और षब्द कोष साईटस्

च) इंटरनेट सामग्री सृजन (कंटेंट क्रिएषन)

छ) इंटरनेट पर हिंदी का भविष्य

ज) विविध क्षेत्रों में कम्प्यूटर का योगदानः

1. षिक्षा क्षेत्र में कम्प्यूटर
2. बैंकों में कम्प्यूटर
3. खेल जगत में कम्प्यूटर
4. कम्प्यूटर और यातायात
5. व्यवसाय में कम्प्यूटर जगत
6. कम्प्यूटर और मनोरंजन

7) **लेखन के मूलभूत सिद्धांत**

अ. समाचारपत्र के लिए लेखन के प्रकारः

1. समाचार लेखन
2. विज्ञापन लेखन
3. साक्षात्कार लेखन
4. समीक्षा लेखन
5. कविता लेखन
6. समाचार लेखन एवं संपादन–षीर्षक संरचना
7. व्यावहारिक प्रूफ षोधन, पृष्ठ सज्जा

आ. रेडियो माध्यम के लिए लेखनः

1. रेडियो लेखन के सिद्धांत
2. रेडियो वार्ता लेखन
3. रेडियो नाटक लेखन
4. रेडियो उद्घोषणा लेखन

इ. टेलीविजन माध्यम के लिए लेखनः

1. टेलीविजन टेलीविजन माध्यम के लेखन टेलीविजन समाचार लेखन
2. टेलीविजन धारावाहिक लेखन
3. टेलीविजन विज्ञापन लेखन
4. संवाद लेखन
5. पटकथा लेखन
6. साहित्य की विधाओं का दृष्य माध्यमों में रूपांतरण

ई. सिनेमा के लिए लेखन

1. सिनेमा लेखन के सिद्धांत
2. फीचर फिल्म लेखन
3. वृत्तचित्र लेखन(डाक्यूड्रामा)

संदर्भ ग्रंथः

1. प्रयोजनमूलक हिंदी–डॉ. नरेष मिश्र
2. कम्प्यूटर–आधुनिक विज्ञान का वरदान–राजीव गर्ग
3. प्रयोजनमूलक हिंदीः प्रक्रिया और स्वरूप, कैलाषचंद्र भाटिया
4. विज्ञापन कला– मधु धवन
5. राजभाषा हिंदी का प्रयुक्तिपरक विष्लेषण – डॉ. सुषमा कोंडे, षैलेजा प्रकाषन, 57–पी, कुंज विहार–2, कानपुर–2
6. मीड़िया लेखनः सिद्धांत और व्यवहार–डॉ. चंद्रप्रकाष मिश्र,
7. प्रयोजनमूलक हिंदी और पत्रकारिता–डॉ. दिनेष प्रसाद सिंह
8. प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप–डॉ. राजेंद्र मिश्र एवं राकेष षर्मा
9. कम्प्यूटर और हिंदी –डॉ. हरिमोहन
10. कार्यालय हिंदी में प्रयोग की दिषाएँ –संपा. उमा षुक्ल
11. मीडिया लेखन : सिद्धांत और व्यवहार – डॉ. चंद्रप्रकाष
12. मीडिया लेखन – संपा. रमेषचंद्र त्रिपाठी/डॉ. पवन अग्रवाल
13. मीडिया लेखन के सिद्धांत – एन. सी. पंत
14. हिंदी के प्रयोजनमूलक भाषा–रूप –डॉ. माधव सोनटक्के
15. हिंदी में सरकारी कामकाज – रामविनायक सिंह
16. भाषा विज्ञान के सिद्धांत – डॉ. त्रिलोचन पांडेय
17. भारतीय मीडिया : अंतरंग पहचान – संपा. स्मिता मिश्र
18. पटकथा लेखन : एक परिचय – मनोहर ष्याम जोषी
19. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. माधव सोनटक्के
20. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. विनोद गोदरे
21. प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
22. प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप – डॉ. राजेंद्र मिश्र / राकेष षर्मा
23. प्रयोजनमूलक हिंदी प्रक्रिया और स्वरूप – डॉ. कैलाषचंद्र भाटिया
24. प्रयोजनमूलक भाषा और कार्यालयी हिंदी – डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी
25. प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिंदी – डॉ. ओमप्रकाष सिंहल
26. प्रषासन में राजभाषा हिंदी – डॉ. कैलाषचंद्र भाटिया
27. प्रामाणिक आलेखन और टिप्पण – प्रो. विराज
28. प्रषासनिक और व्यावहारिक पत्रव्यवहार (खंड 1 व 2) ए. ई. विष्वनाथ अय्यर
29. प्रेस कॉन्फ्रेस और भेंटवार्ता – डॉ. नंदकिषोर त्रिरवा
30. राष्ट्रभाषा हिंदी : समस्याएँ और समाधान – डॉ. देंवेंद्रनाथ षर्मा
31. राजभाषा के संदर्भ में हिंदी आंदोलन का इतिहास – उदयनारायण दुबे
32. राजभाषा हिंदी – डॉ. भोलनाथ तिवारी

33. राजभाषा हिंदी की काहानी – डॉ रामबाबू षर्मा
34. संघीय राजभाषा के संदर्भ में पारिभाषिक / वैज्ञानिक षब्दावली के निर्माण की समस्याएँ – बलरामसिंह सिरोही
35. संपादन कला एवं प्रूफ पठन – डॉ. हरिमोहन
36. संवाद और संवाददाता – डॉ. राजेंद्र
37. समाचार, फीचर लेखन तथा संपादन कला – डॉ. हरिमोहन
38. सरकारी कार्यालयों में हिदीं का प्रयोग – डॉ. गोपीनाथ श्रीवास्तव
39. साक्षात्कार – मनोहर ष्याम जोषी
40. सूचना, प्रौद्योगिकी और जनमाध्याम – प्रो. हरिमोहन
41. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक –हर्षदेव
42. दृक–श्राव्य माध्यम लेखन – डॉ. राजेंद्र मिश्र /ईषिता मिश्र
43. देवनागरी में यांत्रिक सुविधाएँ –राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली
44. दूरदर्षन : हिंदी के प्रयोजनमूलक विविध प्रयोग –डॉ. कृष्णकुमार रत्तू
45. व्यावहारिक हिंदी – डॉ. कैलाषचंद्र भाटिया
46. व्यावसायिक संप्रेषण – अनूपचंद भायाणी
47. प्रयोजनमूलक हिंदी अधुनातन आयाम– डॉ. अंबादास देषमुख
48. प्रयोजनमूलक हिंदी– डॉ. मधुकर राठौड़
49. प्रयोजनमूलक हिंदी– डॉ. गोरख थोरात

————————————————

द्वितीय सत्र

प्रश्नपत्र 8 : विषेष स्तर (वैकल्पिक)
विषेष विधा तथा अन्य

(घ) हिंदी दलित साहित्य

उद्देष्यः

1. छात्रों को दलित विमर्ष एवं साहित्य का परिचय कराना।
2. छात्रों को दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि से अवगत कराना ।
3. छात्रों को दलित साहित्य के सौंदर्यषास्त्र से परिचित कराना ।
4. दलित साहित्य का समाजषास्त्रीय अध्ययन करना।
5. छात्रों को हिंदी साहित्य में दलित साहित्य के योगदान से परिचित कराना ।
6. समीक्षा, अनुवाद एवं षोध की दृष्टि से छात्रों को दलित साहित्य की ओर प्रेरित करना, आदि।

अध्यापन पद्धतिः

1. व्याख्यान तथा विष्लेषण ।
2. संगोष्ठी, स्वाध्याय तथा गुटचर्चा ।
3. दृक्–श्राव्यो माध्यमों /साधनों का प्रयोग ।
4. राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न कार्यालयों की अध्ययन यात्रा ।
5. विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत अधिकारी विद्वानों के व्याख्यान ।

अध्ययनार्थ विषयः

1. दलित साहित्य तथा दलित विमर्ष की व्याख्या।
2. दलित साहित्य : अवधारणा और स्वरूप ।
3. हिंदी दलित साहित्य का उद्भव एवं विकास।
4. दलित साहित्य : प्रेरणास्त्रोत और प्रभाव ।

    क) कबीर
    ख) संत रैदास
    ग) महात्मा ज्योतिराव फुले
    घ) कार्ल मार्क्स
    च) डॉ बाबासाहेब आंबेडकर
5. दलित साहित्य पर कबीर, रैदास, महात्मा ज्योतिराव फुले, कार्ल मार्क्स, डॉ बाबासाहेब आंबेडकर, अमेरिकन निग्रो साहित्य आदि का वैचारिक प्रभाव।

6. दलित साहित्य :उद्‌भव, परंपरा और विकास
7. परंपरागत साहित्य और दलित साहित्य : अभिव्यक्त भाव और भाषा का अंतर तथा साम्य –भेद ।
8. परंपरागत साहित्य और दलित साहित्य : साम्य –भेद ।
9. दलित साहित्य की विषेषताएँ एवं महत्व।
10. दलित साहित्य का अभिव्यक्ति पक्ष तथा कलापक्ष।
11. दलित साहित्य में अभिव्यक्त भारतीय समाज।
12. दलित साहित्य का सौंदर्यषास्त्र।
13. हिंदी दलित साहित्य की रचनाएँ– जस–तस भई सबेर (उपन्यास), जूठन (आत्मकथा) श्रेष्ठ दलित कहानियाँ– संपा. मुद्राराक्षस, गूँगा नहीं था मैं (कविता संग्रह) इनका विषेष अध्ययन।

अध्ययनार्थ पाठ्यपुस्तकें :

1. **जस–तस भई सबेर – सत्यप्रकाष (उपन्यास)**
2. **जूठन– ओमप्रकाष वाल्मीकि (आत्मकथा)**
3. **श्रेष्ठ दलित कहानियाँ– संपा. मुद्राराक्षस**
4. **गूँगा नहीं था मैं– जयप्रकाष कर्दम (कविता संग्रह)**

———————————————

संदर्भ ग्रंथः

1. दलित साहित्य का सौंदर्यषास्त्र–ओमप्रकाष वाल्मीकि
2. दलित हस्तक्षेप– रमणिका गुप्ता
3. अस्पृष्यता एवं दलित चेतना–डॉ. पूरणमल
4. हिंदी साहित्य में दलित अस्मिता– डॉ. कालीचरण स्नेही
5. इक्कीसवीं षती के हिंदी साहित्य में स्त्री एवं दलित विमर्ष, डॉ. अषोक धुलधुले
6. भारतीय दलित साहित्यः परिप्रेक्ष्य, संपादक पुन्नीसिंह
7. दलित कहानी संचयन– रमणिका गुप्ता
8. दलित चिंतन का विकास– अभिषप्त चिंतन से इतिहास चिंतन की ओर–डॉ. धर्मवीर
9. उत्तर आधुनिकता और दलित साहित्य– कृष्णदत्त पालीवाल
10. दलित साहित्य–एक मूल्यांकन– प्रो. चमनलाल
11. दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार– रमणिका गुप्ता
12. हिंदी आंचलिक उपन्यासों में दलित चेतना– भरत सगरे
13. दसवें दषक के हिंदी उपन्यासों में दलित चेतना– वसानी कृष्णावंती पी.
14. दलित चेतना और हिंदी उपन्यास– डॉ. एन. एस. परमार
15. दलित साहित्य और समसामयिक संदर्भ– डॉ. श्रवण कुमार मीणा
16. दलित साहित्य की भूमिका– हरपाल सिंह अरुष
17. हरिजन से दलित– संपा. राजकिषोर
18. भारतीय दलित आंदोलन की रूपरेखा– केवल चंचरीक
19. हिंदी दलित आत्मकथा– डॉ. संजय नवले
20. दलित साहित्य का समाजषास्त्र– हरिनारायण ठाकुर
21. दलित साहित्य का सौंदर्यषास्त्र–षरणकुमार लिंबाले
22. मार्क्स और आंबेड़कर (मराठी)– डॉ. रावसाहेब कसबे, अनुवाद– डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

————————————————